Robert King Merton

R.K. Merton was an American sociologist.

Born: इनका जन्म 4 July 1910 Philadelphia (अमेरिका) में हुआ था।
(फिलाडेल्फिया)

Died: 23 Feb 2003 न्यूयार्क.
ये पारसन्स के शिष्य थे

प्रमुख कृतियां / Main Books: 1. Science, Technology and Society in 17th Century England (1938)

2. The Focussed Interview (1956)

3. Social Theory and Social Structure (1957)

4. Contemporary Social Problems (with Nisbet), 1961)

5. The Sociology of Science (1973)

Main Sociological Theory of Merton

1. Middle Range Theory
2. Social Structure
3. Theory of Anomie
4. Structural Functionalism
5. Mainfest and Latent Functions.

प्रकार्यवादी विचारधारा के अनुसार समाज एक व्यवस्था है जिसके विभिन्न अंग परस्पर सम्बन्धित होते हैं और समाज के विभिन्न अंग व्यवस्था बनाये रखने के लिये कोई न कोई

Scanned with CamScanner

②

योगदान अवश्य देते हैं। यह प्रकार्य कहलाता है अर्थात् प्रकार्य वह गतिविधि है जिसके द्वारा समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था बनी रहती है।

मर्टन का प्रकार्यवादी मॉडल
Functional Model of Merton

(Postulats of functional Unity)
प्रकार्यात्मक एकता संबंधी अभिधारणा: मर्टन का कहना है कि अत्यं

विभेदीकृत समाजों में यह आवश्यक नहीं कि प्रकार्यात्मक एकता पायी जाय अर्थात् मानव समाज में पूर्ण प्रकार्यात्मक एकता पाया जाना सम्भव नहीं है। एक ही समाज में रहने वाले वाले कुछ समूहों के लिये रीति-रिवाज, लोकाचार, व्यवहार प्रकार्यात्मक हो सकते हैं परन्तु वही दूसरी ओर वह अन्य के लिये दुष्प्रकार्य है।

② सार्वभौमिक प्रकार्यवाद सम्बन्धी अभिधारणा:
(Postulate of Universal Unity)

मैलिनोवस्की ने सार्वभौमिक प्रकार्यवादी विवरणा प्रस्तुत की जिसके अनुसार सभी आदर्श सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिमान समाज के लिये निश्चित प्रकार्य हैं। उनके अनुसार ये सामा० सांस्कृतिक आदर्श प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में अवश्य पाये जाते हैं परन्तु मर्टन ने इसकी आलोचना की है। उनके अनुसार यह आवश्यक नहीं प्रत्येक सामा० सांस्कृतिक आदमत प्रकार्यात्मक हो।

Scanned with CamScanner

③

3 प्रकार्यात्मक अपरिहार्यता Indispensability)

मैलिनोवस्की द्वारा प्रस्तुत अपरिहार्यता सम्बन्धी अवधारणा है अनुसार यदि कोई सामा० धार्मिक या सांस्कृतिक रीतिरिवाज किसी समाज में विद्यमान है तो उसका यह मतलब है कि उस प्रथा या प्रकार्य के बिना समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती है अर्थात प्रकार्य समाज की आवश्यकताओं को अपना अस्तित्व बनाये रखती है जब तक समाज की आवश्यकता पूर्ति करते रहते है परन्तु Merton ने इस प्रलय की आलोचना किया उनके अनुसार किसी समाज व्यवस्था में कोई भी सामा० सांस्कृतिक आदर्श अपरिहार्य नहीं है इस प्रकार Merton का मानना है कि प्रकार्यवाद में क्यारिबी सम्भवं है SA को ध्यान में रखते हुए Merton ने प्रकार्यवादी प्रारूप प्रस्तुत किया जिसके अन्तर्गत प्रकार्य, दुष्प्रकार्य, प्रकट प्रकार्य, अप्रकट प्रकार्य और प्रकार्यात्मक विकल्प की अवधारणायें दी।

प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रारूप Paradigm of functional analysis.

Merton ने प्रकार्यात्मक सिद्धान्त का ऐतिहासिक विश्लेषण किया उन्होंने विश्लेषण के लिये एक माडल प्रस्तुत किया जो की एक ढाँचा है जिससे किसी समाज का अध्ययन किया जा सकता है इस प्रारूप या माडल में 11 Items या मद है जिसमें किसी भी समाज की प्रकार्यात्मक स्थिति का विश्लेषण किया जा सकता है जो इस प्रकार है :-

मद (Items) : वे मद जिनके प्रकार्यों की पहचान करनी है सर्वप्रथम उन आदर्श सामा० सांस्कृतिक मदों को पहचानना चाहिये जिनका प्रकार्यात्मक अध्ययन करना है अर्थात मद को निश्चित करना चाहिये।

Scanned with CamScanner

५.

2 - अध्ययन सम्बन्धी उद्देश्य और परिणाम

मद का अध्ययन उद्देश्य निश्चित होना चाहिये। निश्चित लक्ष्य प्रकार्यात्मक विश्लेषण में सहायक होता है।

3. मद के प्रकार्य किसी प्रकार व्यवस्था बनाये रखने में सहायक हैं।

Merton के अनुसार प्रकार्यात्मक विश्लेषण में यह खोज होनी चाहिये कि जिस मद का अध्ययन कर रहे हैं वह व्यवस्था बनाये रखने में कहाँ तक सहायक है। Merton ने सन्दर्भ में कुछ अवधारणाओं की व्याख्या की जो इस प्रकार हैं:

1. प्रकार्य   2. दुष्प्रकार्य

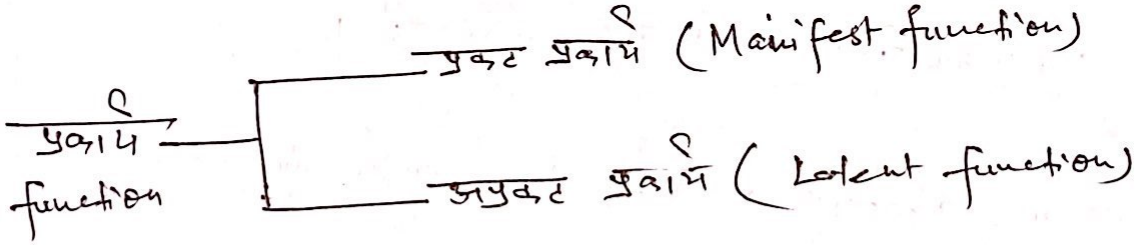

प्रकार्य (function)
- प्रकट प्रकार्य (Manifest function)
- अप्रकट प्रकार्य (Latent function)

1. **प्रकार्य (function):** किसी भी सामा० सांस्कृतिक इकाई का वह योगदान जो व्यवस्था के अनुकूलन में वृद्धि करे वो प्रकार्य है मर्टन ने प्रकार्य के दो स्वरूप बताये

(i) **प्रकट प्रकार्य (Manifest function):** प्रकट प्रकार्य वो अनुकूलन योग्य परिणाम है जो व्यवस्था के अनुकूलन और समायोजन में सहायक और स्वीकृत योगदान है।

(ii) **अप्रकट प्रकार्य (Latent function):** वह प्रकार्य जो अवलोकन योग्य परिणाम है जो इच्छित नहीं होते और ना मान्यता प्राप्त।

Scanned with CamScanner

5.

दुष्प्रकार्य वे योगदान जो व्यवस्था के अनुकूलन को कम करते वे दुष्प्रकार्य है

Exp: (नौकरशाही)

4. कुल स्थापकों की पहचान जिनके लिए मद (Items) प्रकार्यात्मक हैं – ष.

5. व्यवस्था की आवश्यकताओं और पूर्व आवश्यकताओं को पूरा करने वाले प्रक्रमों की खोज।

6. वो क्रिया विधि जिनसे प्रकार्य उत्पन्न किये जाये।

7. **प्रकार्यात्मक विकल्प** – एक सामा० स्तर के अनेक प्रकार्य हो सकते हैं। और इनके मोबाइलों के एक ही प्रकार्य हो सकते हैं

8. **संरचनात्मक दबाव** हर संरचना के प्रकार्यात्मक दबाव होते है जो और एक निश्चित प्रकार्य या मद का चयन करने वाले दबाव डालते हैं।

9. **गतिशीलता और परिवर्तन**: जैसे-2 सामा० व्यवस्था की आवश्यकताओं में बदलाव आता है प्रकार्यों में भी सहुलता आती जाती है।

10. **प्रकार्यात्मक मान्यता** और युक्ति मुक्त प्रमाणित प्रमाणीकरण: प्रत्येक मद के प्रकार्य ऐसे हो जो प्रमाणित करे कि व्यवस्था की आवश्यकता पूर्ति उनके (प्रकार्यों) सम्पादन द्वारा हो।

11. प्रकार्यात्मक विश्लेषण से जुड़े वैचारिक समस्यायें: प्रकार्यात्मक सिद्धान्त विचारधारा से मुक्त होती है।

———